

डॉ.उर्मिला पोरवाल
बैंगलोर कर्नाटक

कनाडा निवासी हिन्दी साहित्यकार प्रो सरन घई और उनकी रचना धर्मिता

कनाडा या कैनेडा (अंग्रेजी:Canada) उत्तरी अमेरिका महाद्वीप पर बसा एक देश, जो अटलाण्टिक , प्रशान्त और आर्कटिक महासागर से घिरा हुआ प्राकृतिक सुंदरता से सुसज्जित है| अमेरिका का नाम आते ही स्वाभाविक रूप से स्पष्ट हो जाता है कि पाश्चात्य संस्कृति और अंग्रेजीयत का बोलबाला, ऐसे में एक व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति और हिंदी की अलख जागते हुए प्रकाश में आते है प्रो सरन घई| बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न सरन घई जी एक उच्चकोटि के कहानीकार,उपन्यासकार,फ़िल्म निर्माता-निर्देशक ,गीतकार, रेडियोकलाकार, हिंदी समाचार वाचक, समाज सेवक और कवि ही नहीं, एक वरिष्ठ सफल प्राध्यापक एवं संपादक भी हैं| प्रो. सरन घई जी जिस प्रकार बहुमुखी प्रतिभावान हैं उसी प्रकार एक निराले व्यक्तित्व के धनी भी हैं| हमारे लिए गर्व की बात यह है कि कनाडा में हिंदी के परचम को लहराने वाले सरन घई जी भारतीय मूल के हैं I

सरन घई जी भारत में 15 जून, 1950 को जयपुर, राजस्थान में , जगजीत सिंह जी और इकबाल कौर जी के घर जन्मे, 7 भाइयों और एक बहन का भरा पूरा परिवार, सातों भाइयों में सबसे छोटे| पिता जी पेशे से व्यावसायिक लेकिन 58 वर्ष की आयु में जयपुर स्थित मालवीय इंजीनियरिंग कॉलेज में एक अच्छे पद पर कुछ वर्ष तक कार्य कर सेवानिवृत्त हुए माता जी परिवार को संवारने में जीवन भर तल्लीन रहीं I

घई जी परिवार के परिवेश सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक पक्ष के बारे में बताते हैं कि – "हमारा सारा परिवार रेडियो व्यवसाय में था लेकिन सन् 1960 के लगभग रेडियो व्यवसाय से ध्यान हटकर भाइयों का ध्यान शनैः शनैः नौकरियों की तरफ़ चला गया और सभी भाइयों ने नौकरियाँ कर लीं लेकिन साइड बिज़नेस के रूप में रेडियो व्यवसाय चलता रहा| हम अपने परिवार को एक मध्यमवर्गीय परिवार कह सकते हैं जो समाज में अपनी पहचान रखते थे| हमारा सारा परिवार राधास्वामी धर्म, दयालबाग, आगरा से जुड़ा है|"

सरन जी का सारा परिवार रेडियो के व्यवसाय में ही सलंग्न था| इस संदर्भ में उस समय को याद करते हुए वे बताते हैं कि "आज के युग में टीवी ने रेडियो को शांत कर दिया है वरना पहले तो रेडियो ही एक मात्र मनोरंजन का साधन था | हम जब तक कोटा, राजस्थान में थे, हमारी एक बहुत बड़ी दुकान थी, लगभग पूरे राजस्थान में उसका नाम था| पिता जी व सभी भाई वहाँ रेडियो बनाते थे व बेचते थे| हमारे स्वयं का रेडियो का ब्रांड था | आप विश्वास नहीं करेंगे, तब मैं पहली कक्षा का विद्यार्थी था| मैं और मुझसे बड़े भाई जो तीसरी कक्षा में पढ़ते थे, की ड्यूटी थी कि स्कूल जाने से पहले दुकान पर जाओ, दुकान की सफ़ाई करके सब टूल्स सही जगह लगाओ और तब स्कूल जाओ| सब बड़े भाइयों की ड्यूटी थी कि स्कूल से वापिस आकर पहले घर नहीं, दुकान पर जाओ, एक रेडियो पूरा नया बनाओ और अपना बस्ता व रेडियो उठाकर घर लेकर जाकर मम्मी को सुनाओ कि ठीक बन गया है कि नहीं, आवाज़ ठीक है या नहीं और उसके बाद उनका खाना खेलना होता था| हम बचपन से कठोर अनुशासन में बंधे रहे हैं इसलिये आज उम्र के 7 दशक पार करने के बाद में भी उतने ही उत्साह और लगन से जिंदगी को सार्थक करने की कोशिश कर रहे हैं|

घई जी को बचपन में किस प्रकार से चुनौतियों का सामना करना पड़ा उसको मुखरित करते हुए कहते है कि- हमारा पूरा परिवार एक व्यावसायिक परिवार था और व्यापार में ऊँच-नीच तो स्वाभाविक है उसका असर पूरे परिवार पर पड़ना भी अवश्यंभावी है|

सन् 1960 के पश्चात् जब सब भाइयों ने रेडियो व्यवसाय छोड़कर नौकरी को परिवार का धनाधार बना लिया तो जिसकी जहाँ नौकरी लगी, वह वहाँ चला गया और सारा परिवार बिखर गया|

घई जी बचपन से ही चतुर व बुद्धिमान थे | इसीलिए पढ़ाई के साथ-साथ विद्यालय में अन्य गतिविधियों में सक्रियतापूर्वक बढ़ चढ़कर भाग लेते थे| उनकी प्राथमिक शिक्षा कोटा राजस्थान के सरकारी विद्यालय में सम्पन्न हुई उसके आगे कक्षा 6, 7, 8 की पढ़ाई लाडनूं, मारवाड़ में एक गैर-सरकारी विद्यालय में पूर्ण हुई उसके बाद माध्यमिक शिक्षा कक्षा 9,10 व 11 आदर्श विद्या मंदिर, राजापार्क, जयपुर में पूर्ण कीं तत्पश्चात विज्ञान विषय लेकर उच्च माध्यमिक शिक्षा से इंटरमीडियेट पत्राचार माध्यम से मध्यप्रदेश सेकेंडरी बोर्ड, भोपाल से करने के साथ ही साथ घई जी ने तकनीकी शिक्षा भी प्राप्त की इलेक्ट्रोनिक्स डिप्लोमा और इम्मिग्रेशन डिप्लोमा| अपनी प्रतिभा के फलस्वरूप उन्हें शीघ्र ही सरकारी नौकरी मिल गई| घई जी की प्रथम व सरकारी नौकरी 'भारतीय पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ़ विभाग' (अब भारतीय टेलीकाम्युनिकेशन विभाग) में टेक्नीशियन के पद पर थी जो पदोन्नति के बाद टेक्निकल सुपरवाइजर हो गयीं थी |

इंटरमीडियट पत्राचार के माध्यम से करने का कारण भी यही था उन्होंने स्वयं स्पष्ट रूप से कहा है "ग्यारहवीं पास करते ही मेरी 'भारतीय पोस्ट व टेलीग्राफ़ विभाग में सरकारी नौकरी लग गयी और एक वर्ष की विभागीय ट्रेनिंग के बाद इच्छा हुई कि पढ़ाई का जो दौर छूट गया था, उसे आगे बढ़ाया जाय | नियमित विद्यार्थी नहीं बना रह सकता था क्योंकि टूरिंग जॉब थी, इसलिये पत्राचार माध्यम से पढ़ाई करने का फ़ैसला किया|"

कही न कही परिस्थितियों का हवाला देकर शिक्षा को तिलांजलि देने वाले कई मिलते है लेकिन परिस्थियों के अनुरूप ढलकर अपनी शिक्षा को घई जी ने निरंतर रखा यही उनकी कार्य के प्रति संकल्पित होने का प्रमाण है| घई जी की वर्तमान योग्यता व कार्य उपलब्धियों को देखते हुए कोई भी विश्वास नहीं करेगा कि उन्होंने स्नातक व स्नातकोत्तर की पढ़ाई स्वाध्याय से पूर्ण की थी जिंदगी में अध्ययन करने के लिये कभी कॉलेज या विश्वविद्यालय का मुँह नहीं देखा| उस दौरान नौकरी करने के साथ-साथ घई जी ने सन् 1973 में पत्राचार माध्यम से हिंदी, अंग्रेजी व अर्थशास्त्र से बी.ए. मेरठ विश्वविद्यालय मेरठ से की | पत्राचार माध्यम से ही सन् 1975 में एम. ए. इतिहास, सन् 1979 में एम. ए. हिंदी राजस्थान विश्वविद्यालय से व सन् 1988 में एम. ए. अंग्रेजी अजमेर विश्वविद्यालय, अजमेर से की|

समय पर नौकरी लग जाने से सही समय पर गृहस्थी की शुरुआत भी हो गयी , घई जी का विवाह 21 नवंबर, 1977 को दिल्ली निवासी रीटाजी से हुआ| सौभाग्य से दो बच्चे हैं एक पुत्र अभिनव और एक पुत्री अंकिता दोनों विवाहित है और अपने अपने परिवार में प्रसन्न, सरन जी ने अपने परिवार में भी जिस तरह भारतीय संस्कृति, भाषा, रहन-सहन आदर्शों को स्थान दिया है उससे तो यही प्रतीत होता है कि परायी जमी पर भी उनका दिल हिंदी और हिन्दुस्तान के लिये धडकता है| सरन घई जी की परिवार में पदोन्नति हो गयी है, दादाजी नानाजी बनकर अपने अनुभव और संघर्षों से मिली सीखों के मोती को नाते पोते के बीच बिखेर रहे हैं |

सन् 1991 में उन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर जी.टी. टेक्निकल एजूकेशन बोर्ड (एक गैर -सरकारी संस्था) में डायरेक्टर प्राजेक्ट्स के पद पर सन् 1996 तक काम किया व उसके बाद कनाडा व अमेरिका की ओर कूच कर गये | दरअसल कनाडा में घई जी के बड़े भाई रहते थे | बहुत समय से वे इसरार कर रहे थे कि प्रो. घई कनाडा में ही रहने लग जाये| प्रो. घई की 5 वर्ष की मेहनत व प्रतीक्षा के बाद वे अंतत: कनाडा पहुँच गये|

सन् 1996 में प्रो. सरन घई जी ने कनाडा की धरती पर पहला कदम रखा था लेकिन 15 दिन बाद ही वे अमेरिका चले गये और लगभग तीन वर्ष अमेरिका में रहे , अपने आपको समाचार पत्र-पत्रिकाओं की दुनिया में स्थापित करने के बाद सपरिवार पुनः कनाडा लौट आये और तब से यानि सन् 1999 से कनाडा में ही परिवार सहित रह रहे हैं और हिंदी भाषा के प्रति सक्रिय व समर्पित भाव से पूर्ण लगन से एक साधक की भांति अपनी साधना में जुटें हुए हैं |

जिस प्रकार एक पौधे को अपनी जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाने में समस्याएं आती है कुछ वैसी ही स्थिति एक देश से दूसरे देश में बसने पर होती है घई जी को भी इस बीच अनेक संघर्षो का सामना करना पड़ा, पत्नी रीटा ने सही अर्थों में जीवन साथी की परिभाषा को प्रमाणित किया और प्रत्येक परिस्थिति में कंधे से कन्धा मिलाकर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से साथ दिया। फलस्वरूप सभी संघर्षों से जीत हासिल कर घई जी अपने मुकाम पर पहुंचे , उनका, जीवन में संघर्ष के बारे में विचार है कि - जीवन का दूसरा नाम अगर कुछ है तो शायद वह नाम 'संघर्ष' ही है। हमने अपने बचपन में अमीरी भी देखी है, किशोरावस्था आते-आते गरीबी भी देखी है और अब कनाडा में अपने आपको समाज में एक अच्छे स्तर पर स्थापित होते हुए भी देखा है।

परिवार को "गरीबी की रेखा" का भी सामना करना पड़ा था। इस संदर्भ में घई जी बताते है कि- "व्यवसाय से नौकरी की तरफ़ मुड़ना कुछ वर्ष काफ़ी मुश्किल साबित हुआ। सन् 1960 में एक भाई की नौकरी लाडनूं में लग गई और एक-एक करके सभी भाई लाडनूं-सुजानगढ़ (शेखावाटी) राजस्थान में चले गये जिनमें से आगे चलकर दो भाई आगरा चले गये और एक जयपुर, तो सारा परिवार बिखर गया। एक वो भी समय था कि लगभग 4 वर्ष तक मैंने शायद ही कभी कोई सब्जी चखी हो, मैं तो दोनों समय दही में आलू डालकर दही का रायता खाता रहा। फिर मेरी नौकरी लग गयी और कम से कम मेरे माता-पिता मेरे साथ आराम से रहे।"

उल्लेखनीय है कि बचपन में बिना माँ के रहना अपने आप में ही एक चुनौती है। कुछ समय के लिए उनको माता-पिता से दूर भाईयों के पास रहना पड़ा, इसीलिए उनकी शिक्षा में स्थानांतरण परिलक्षित होतें हैं । घई जी बचपन से कलाकार बनना चाहते थे किन्तु वे कलमकार बन गये, उन्होंने लगभग 10 वर्ष की आयु से ही लेखन प्रारंभ कर दिया था।

लेखन और वक्तव्य कला तो घई जी को विरासत में मिली । उनके पिता जी उर्दू और फ़ारसी के शायर थे। सरन घई स्वयं स्वीकारते है कि उनके प्रेरणास्त्रोत उनके पिताश्री ही थे, उनके पदचिन्हों पर चल कर ही वे सरकारी नौकरी की विषयवस्तु से विपरीत साहित्य की दुनियां में प्रवेश कर गए। प्रो. घई इस संदर्भ में कहते है कि "पहले और एक मात्र प्रेरणा के स्त्रोत थे तो वो मेरे पिता थे। मैं जब भी कुछ लिखता उन्हें जाकर बताता कि मैंने लेख या कविता या कहानी लिखी है। वो अपने सारे काम छोड़कर बैठ जाते कि सुनाओ, क्या लिखा है। उन्हें अच्छा लगता तो वो शाबाशी भी देते थे और ईनाम में दस रुपये का नोट भी। अगर उसमें उन्हें सुधार की जरूरत लगती थी तो शाबाशी तो मिलती थी लेकिन दस का नोट गायब हो जाता था । तब मुझे लगता था कि पिता जी बेईमानी करते हैं पर अब समझ में आया है कि वो सही करते थे। अब मैं मेरे बेटे को जब भी वो मेरी पत्रिका 'प्रयास' का नया अंक डिज़ाइन करता है या इससे पह 'नमस्ते कनाडा' तैयार करता था तो मैं भी अपने पिता की तर्ज पर उसे हर बार $100. भी देता हूँ और कभी-कभी हजम भी कर जाता हूँ ।"

घई जी के जीवन के सम्बंध में ज्योतिषियों द्वारा भविष्यवाणी की गई थी कि 'ये सभी को सुनायेगा पर सुनेगा किसी की नहीं। बिल्कुल वह चरितार्थ हुआ, जैसे जैसे उम्र बढ़ रही थी उनका कवित्व रूप सामने आने लगा था। प्रो. घई 10 वर्ष की आयु से ही कहानियाँ लिखने लग गये थे। प्रथम महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति की रचना कतिपय सन् 1969 में दिल्ली से प्रकाशित 'मुक्ता' पत्रिका में हुई। इससे पूर्व कुछ स्थानीय समाचारपत्रों-पत्रिकाओं में भी कविताएँ, कहानियां, लेख आदि प्रकाशित होते रहे थे वैसे सबसे पहली कहानी हिंदुस्तान' समाचार-पत्र में 11 वर्ष की आयु में प्रकाशित हुई थी।

बचपन से ही घई जी में जिम्मेदारियों को निभाने और नयी-नयी चुनौतियों का डटकर मुकाबला करने की स्वाभाविक प्रवृति थी इसीलिए कनाडा आकर उन्होंने नार्थ-अमेरिका के पहले हिंदी-अंग्रेजी पाक्षिक समाचार पत्र 'नमस्ते कनाडा' का प्रकाशन प्रारंभ किया, उसके बाद विश्व हिंदी संस्थान कनाडा की स्थापना करने के साथ-साथ वे वर्तमान में संचालक का कार्यभार बख़ूबी से संभाले हुए हैं। वे न केवल हिन्दी साहित्य रथ के सारथी बने अपितु पूरी जिम्मेदारी के साथ अपनी भूमिका को निभा भी रहे है।

सरन घई कनाडा में हिन्दी भाषा की स्थिति बताते हुए लिखते है कि- कनाडा के टोरंटो शहर में तो लगभग 50 या कुछ अधिक कवि व रचनाकार हैं। ईमानदारी से लिख रहे हैं। हर माह कवि सम्मेलन होते हैं, साहित्यिक गतिविधियां होती हैं । बहुत से लेखकों कवियों की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'विश्व हिंदी संस्थान' से काफ़ी रचनाकार जुड़े हुए हैं और संस्था द्वारा समय-समय पर जारी गतिविधियों में उत्साह से भाग लेते हैं। अन्य शहरों यथा वैंकूवर, आट्वा, एल्बर्टा, कैलगिरि में सीमित गतिविधियां होती रहती है।"

उनके द्वारा संभाली गयी जिम्मेदारियों और पदभारों की चर्चा की जाये तो मुख्य रूप से सर्वप्रथम संस्थापक और संचालक - विश्व हिंदी संस्थान कल्चरल आर्गेनाइजेशन कनाडा और संपादक- प्रकाशक हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय मासिक ई-पत्रिका प्रयास। का उल्लेख करना पर्याप्त होगा जो उनकी पहचान बन गए और नींव देखें तो कई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में सलाहकार समिति सदस्य, अध्यक्ष निदेशक समाज सेवक के रूप में दिखाई देते हैं, उन्होंने लंबे समय तक कनाडा में अध्यापन कार्य भी किया है।

प्रो. घई का यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो' में हिंदी अध्यापन करने का बहुत अच्छा अनुभव रहा है। प्रो. घई के शब्दों में- 'विद्यार्थियों से मैंने अध्यापक शिक्षार्थी के स्थान पर पारिवारिक संबंध यथा पिता-पुत्र व पिता-पुत्री जैसे संबंध बनाये जो सर्वथा सफल रहे। भारतीय मूल के मेरे विद्यार्थियों ने हिंदी सीखने को अपनी माटी से जड़े एक पुनीत कृत्य की भांति लिया और अन्य देशों के विद्यार्थियों ने इसे भारत के प्रति उनकी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिये सीखा।"

आजकल फीडबैक का बड़ा चलन है, हालहीं में घईजी द्वारा कई साल पहले विद्यार्थियों द्वारा लिखे उद्गारों को सार्वजानिक रूप से साँझा भी किया था जिनको पढ़ना घईजी के शिक्षण और हिन्दी के प्रति सेवाभाव से परिचित होना है। एक शिक्षक आने वाली पीढ़ी का अर्थात भविष्य का निर्माता होता हैं इसीलिए हिंदी अध्यापन घईजी के लिए मील का पत्थर साबित हुआ और वे नई पीढ़ी के अंतर्मन में हमारी हिंदी के प्रति सम्मान और प्रेम के बीजवपन कर पाए घईजी आज भी कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के होने के बाद भी हिंदी भाषा के प्रति कनाडा में समर्पित भाव से कार्य कर रहे है।

साहित्यकार सरन घई बेहद विनम्र लेखक हैं। वैसे भी भारतीय लेखकों की एक परम्परा यह भी रही है कि वे अपने जीवन, व्यक्तित्व और कृतिव के बारे में कभी मुखर नहीं होते हैं । यही कारण है कि अतीतकालीन अनेक लेखकों के जीवन्तवृत आज तक अज्ञात ही रह गये है। लेकिन सरन घई जी पर यह चरितार्थ नहीं होती , मेरे द्वारा साक्षात्कार का निवेदन करने पर उन्होंने ना सिर्फ सहर्ष स्वीकारा अपितु खुलकर जीवन के हर पड़ाव पर चर्चा की। चाहे फिर वह अच्छे दिन हो जीवन के या संघर्ष वाले दिन, उनका मानना है कि हमारा जीवन किसी के लिए सबक या मार्गदर्शक बन जाये तो ज्यादा अच्छा होगा।

किसी लेखक अथवा साहित्यकार के रचना-कर्म को उसके व्यक्तिगत जीवन तथा अनुभवों से पृथक् करके नहीं परखा जा सकता है, क्योंकि रचनाकार के भाव एवं विचार उसके जीवन और उसके अनुभव से फूटकर निकलते हैं। रचनाकार के साहित्यिक सृजन को समझने के लिए वास्तविक जीवन की समझ होना जरूरी है। साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब उसकी रचनाधर्मिता में दिखाई देता है। रचनाकार जो कुछ भी देखता है, महसूस करता है, रचना की पृष्ठभूमि उसी से निर्मित होती है और वाणी उसे शब्दों द्वारा साहित्य में बदल देती है। साहित्यकार सरन घई की रचना प्रक्रिया भी उनके अनुभवों का सकारात्मक रूप ही प्रदर्शित करती है। इनकी रचनाधर्मिता, चिन्तन की मौलिकता, दर्शन की गंभीरता, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के गुरू-गम्भीर ज्ञान से इनकी आसक्ति और मोह भावना से इनका लेखकीय व्यक्तित्व पूरी तरह से ओतप्रोत रहा है, इसमें दो राय नहीं हैं। जो घईजी से परिचित है, वे उन्हें 'हिंदी के विकास, प्रचार- प्रसार का दूत, बहुमुखी प्रतिभा के धनी विदवान "हिंदी भाषा केअंतर्राष्ट्रीय राजदूत कहकर सम्मानित करते हैं

घई जी ने अपनी रुचि के अनुरूप हिंदी साहित्य की गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में अपनी रुचि के अनुरूप लेखन कार्य कर रहे है। घई जी स्वयं को प्रवासी लेखक कहलाना पसंद करते हैं वे अपनी अलग पहचानन बनाना पसन्द करते हैं । इस संदर्भ में उनके निम्न विचार है- "हाँ, क्यों नहीं। अलग हटकर कुछ पहचान बनती है तो अच्छा लगता है लेकिन भारत स्थित कुछ रचनाकारों की मनःस्थिति ऐसी है कि वे हमें 'प्रवासी साहित्यकार' नहीं अपितु 'पराया साहित्यकार' की संज्ञा देने को

तत्पर रहते हैं, तब थोड़ा दुख लगता है ।"

कनाडा में भारतीय आप्रवासन यानी भारतीय मूल के लोगों के जाकर बसने का चलन पिछले कुछ सालों में इतना तेजी से बढ़ा है कि कहावत बन गयी है - कनाडा में बसता है मिनी इंडिया।

प्रो. सरन घई हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कनाडा में सन् 1999 से सक्रिय हैं। "वर्तमान में कनाडा में प्रो. सरन घई का घर भारतीय लेखकों के लिए एक तीर्थ स्थान है। भला हिंदुस्तान का कवि व शायर कनाडा जाये और प्रो. सरन घई की मेहमाननवाजी से बचा रह जाये ऐसा हो ही नहीं सकता। सही पूछा जाये तो प्रो. सरन घई भारत और कनाडा के सेतु पुरुष है। उन्होंने कनाडा और भारत के बीच की दूरियों को अपने सत्व्यवहार से पाट दिया है।

प्रो. घई जी देश और विदेश, दोनों ही जगह अपनी बहुमुखी प्रतिभा, शालीनता और कर्मठता के कारण बहुत सम्मानित व्यक्तित्व है। वैसे तो किसी भी व्यक्ति के लिए देश प्रेम, भाषा प्रेम के समक्ष सम्मान बोने होते हैं, परन्तु कहीं न कहीं ये सम्मान हौसला बढ़ाते है, इसीलिए वे संस्थान भी उतने ही सम्मान के पात्र है जिन्होंने प्रो. घई के कार्यों को पहचाना, मूल्याकंन किया और सम्मानित किया ।

प्रो. घई 35 अलंकरणों से सम्मानित हुए है और सबसे महत्वपूर्ण विक्रमशीला हिंदी विद्यापीठ भागलपुर द्वारा उन्हें विद्या वाचस्पति एवं विद्या सागर की मानद उपाधि से भी विभूषित किया गया है।

भारत देश, घई जी के लिए अब आकर्षण का केंद्र है जो उनको अपनी ओर आने के लिये आकर्षित है वे इस बारे में बताते है कि "भारत तो स्वयं ही एक आकर्षण है। भारत मेरी जन्मभूमि है, 45 वर्ष तक कर्म भूमि रही और अब आकर्षण भूमि है। यद्यपि 99% मित्र सोशल मीडिया से बने हैं लेकिन उनमें जो नि:स्वार्थ प्रेम भावना है, वह लाख अपनी पारिवारिक रिश्तेदारी में नहीं मिलती। प्रो. सरन घई ने वर्तमान में अनेकों संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और इसके साथ ही लेखन कार्य भी कर रहे है, वे कहते हैं -'मैं इन पंक्तियों से स्वयं को प्रेरणा देता हूँ :

निज कर्म पर विश्वास हो, मन में प्रभु की आस हो,
फिर क्यों सफलता ना मिले, ठाना इरादा खास हो,
तो विश्व लेकर साथ में, ओ 'सरन' तुम बढ़ते चलो,
ऐ 'सरन' तुम बढ़ते चलो।"

प्रो. सरन घई आज के साहित्यकारों से अपने मन की बात बाताते हुए कहते है कि 'जैसा कि मैंने ऊपर
कहा, जो लिखो सार्थक लिखो, निरर्थक मत लिखो, मंजिल की ओर ले जाने वाला लिखो, मंजिल से भटकाने वाला मत लिखो, अपना मत लिखो, मत मतांतर में उलझाने वाला मत लिखो।

प्रो. घई प्रयोगवादी साहित्यकार है वे स्पष्ट करते हुए बताते है कि 'यह एक परखा हुआ सत्य है कि साहित्य समाज का दर्पण हैं। जैसे जैसे समाज के प्रारूप में परिवर्तन आते हैं, साहित्य का रूप भी बदलता जाता है। आज के युग में प्रेमचंद की कहानियों का रसास्वादन तो किया जा सकता है पर प्रेमचंद जैसी कहानियां कोई बिरले ही लिखता होगा। कालांतर में यह परिवर्तन उतना ही बड़ा होता जाता है जितना कागज-कलम से कम्प्यूटर जैसी किसी विधा पर कोई लेख लिखना और अब कम्प्यूटर से कागज-कलम जैसे विषय पर कोई लेख लिखना ।"

युवाओं की देश की उन्नति में अहम् भूमिका होती है। साहित्यकारों का लेखन के संदर्भ में वे अपनी अभिव्यक्ति को मुखरित करते हुये कहते है कि 'साहित्यकार युवा हो या प्रौढ़ यह अहम् प्रश्न नहीं है। अहम प्रश्न है साहित्य युवा होना चाहिए और उससे भी अधिक, सार्थक होना चाहिए। सोशल मीडिया के चंद रचनाकार बुरा ना मानें यदि मैं कहूँ कि कुछ भी दो लाइने जोड़कर फ़ेसबुक पर डाल देते हैं जिनका न कोई अर्थ हो न दिशा, ऐसे साहित्य को रचने वाले साहित्य की छवि खराब करते हैं। बस मेरा तो इतना कहना है, जो भी लिखें, सार्थक लिखें, निरर्थक न लिखें।'

प्रो. सरन घई पुराने और नए साहित्यकारों के लेखन में आये हुए कुछ अंतर स्पष्ट करते हुए बताते है कि जो जैसी परिस्थितियों और जैसे सामाजिक परिवेश में जीता है वह वैसे ही साहित्य की रचना करता है फिर चाहे वह नयी पीढ़ी का साहित्यकार हो या पुरानी पीढ़ी का| एक बात और चाहे साहित्यकार किसी भी उम्र का हो, लिखना सदैव किसी नये विषय पर ही चाहता है क्योंकि वो जानता है कि पाठक की यही डिमांड है| फिर भी इतना अंतर अवश्य है कि पुरानी पीढ़ी का लेखक आशीर्वादात्मक और मर्यादाओं से ओतप्रोत साहित्य की रचना करना पसंद करता है और नया लेखक वैज्ञानिक मापदंडों पर विषय को परखकर उस पर अपने साहित्य की आधार शिला स्थापित करता है| लेखन में लेखक के परिवेश का बहुत मायने तक प्रभावित करता है|

प्रो. घई भारत के साहित्य को विश्व के साहित्य से कितना भिन्न पाते हैं| इस बारे में अपने विचारों को अभिव्यक्त करते है कि हर भाषा में विषय की सोच और अप्रोच अलग तरह से है| वैसे भी साहित्य भौगोलिक क्षेत्र व सामाजिक परिस्थितियों का अनुगामी है और उन्हीं के अनुसार ढलता भी है| भारत में अक्सर सुखांत फ़िल्में व नाटक पसंद किये जाते हैं जबकि इंगलैंड में दुखांत | अगर व्यक्तिगत रूप से मेरे अनुभव की बात करें तो एम. ए. हिंदी करते समय हिंदी कवियों, लेखकों, कहानीकारों और उपन्यासकारों यथा सूर, तुलसी, प्रेमचंद, मीरा, माखन लाल चतुर्वेदी, को पढ़ा और एम. ए. अंग्रेजी करते समय शेक्सपीयर, शैली, कीट्स, ब्राउनिंग, टैनिसन आदि से दोस्ती की| बात फिर घूम फिर कर वहीं आ जाती है, भौगोलिक परिस्थितियों और सामाजिक परिवेश की, साहित्य इन्हीं के आस-पास घूमता है|

प्रो. घई की पैदाइश भारत की है और अभी वे कनाडा में रहते हैं तो लेखन के समय पर पीछे छूट गया देश, शहर, गाँव, खेत खलियान, लेखन में अवश्य ही हावी होता होगा, इस संदर्भ में वे बताते है कि हाँ, जब अंग्रेजी में कुछ लेख आदि लिखने होते हैं तो उनमें कनाडा-अमेरिका का परिवेश हावी रहता है पर जब बात हिंदी लेखन की होती है तो मेरा शहर (जयपुर) और मेरा देश भारत हर पन्ने पर बिखरा रहता है | प्रो. घई जी हिंदी के साथ साथ अंग्रेजी में भी लेखन कर्म कर रहे हैं| लेखन के मूल में लेखक के परिवेश, विचारधारा, व प्रेरणा इत्यादि प्रभावित करती है| हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के सृजन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मायने दोनों में अलग अलग है, वे इस संदर्भ में बताते है कि "अंग्रेजी में भी बहुत लिखा है और हिंदी में भी, पर सही बात तो यही है कि जब भी अंग्रेजी में लिखा तो दिमाग से लिखा और हिंदी में लिखा तो दिल से लिखा| अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मैंने दोनों भाषाओं में लिखते समय जिया है पर जब-जब हिंदी में लिखा है खुशी से लिखा है और जब-जब अंग्रेजी में लिखा है, जरूरत के लिये लिखा है| उल्लेखनीय है की सरन जी ने सौ से ज्यादा अंग्रेजी और हिंदी में कविता , कहानी , उपन्यास आदि साहित्य की विधाओं पर रचनाये लिखी हैं और साहित्य को समृद्ध किया है| कुछ रचनाओं ने तो इतिहास की निर्मिति की हैं जिन पर अलग से विस्तारपूर्वक चर्चा करना उचित होगा|

साहित्यकार रामकिशोर उपाध्याय ने प्रो. घई के बारे में कहा है कि "हिंदी के अनन्य सेवक और हिंदी को यू. एन.ओ. भाषा बनवाने हेतु चिर प्रयत्नशील और ई-पत्रिका 'प्रयास' के माध्यम से हिंदी प्रचार-प्रसार का श्रेय विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा के संस्थापक एवं वर्तमान अध्यक्ष प्रो. सरन घई को रहा है| सरन घई समयानुरूप आगे बढ़ने वाले साहित्यकार है वे यद्यपि आज कल सोशल साइट्स पर अपनी निरंतर सक्रिय भूमिका निभा रहे है पर वे उस समय से लेखन के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं, जब सोशल साइट्स और ब्लॉग नहीं थे|तब से रचना क्रम निरंतर जारी है| हाँ, लिखने का रूप अवश्य बदल गया है| पेन और डायरियों का साथ छूट गया है| उसकी जगह पहले टाइपराइटर ने ले ली थी और अब कम्प्यूटर जीवन साथी बन गया है| सोशल साइट्स और ब्लॉग का जमाना तो बहुत नया है लेकिन इनके कारण लेखन और पाठन को विस्तार मिला है, उसने भौगोलिक सीमाओं को बहुत पीछे छोड़ दिया है| जिहोंने कम्प्यूटर नहीं अपनाया, वो साहित्य क्षेत्र में किसी हद तक अपनी पहचान भुलाये जा रहे हैं| युग के अनुसार चलना और अपने आपको परिवर्तन के साथ परिवर्तित कर लेने में सदैव भलाई है, बुरा कुछ नहीं|

भारत के आलावा कनाडा, अमेरिका, हॉलैंड, फ्रांस, इंग्लैण्ड, नेपाल, मॉरीशस, श्रीलंका, न्यूजीलैंड, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया तथा दुनिया के ऐसे तमाम देशों के साहित्यकारों एक मंच पर लाने का भगीरथ कार्य किया है तथा इस कार्य में बिना थके हुए आज भी प्रो. सरन निरंतर जुटे हुए पत्रकारिता के बाद अध्यापकीय जीवन में अपना नवजीवन प्रारम्भ किया था किन्तु साथ ही अपनी रचना धर्मिता को निरंतर गति देते रहे हैं| कहा जाता है कि यदि जागते हुये खुली आँखों से ख्वाबों देखा जाये और निरंतर उसे पूर्ण करने में डट रहो तो वो देखा हुआ ख्वाबों भी हकीकत में तब्दील हो जाते हैं| घई जी ने भी कुछ इस तरह के ख्वाबों को अपनी आँखों में संजोया है| अपने ख्वाबों को पूर्ण करने के लिये वे ईश्वर से शीघ्र सफल होने की कामना करते हुये निरंतर अपने कार्य को धरातल में लाने के लिये दिन-रात एक जुट होकर मेहनत करते रहे है| उनका ख्वाब हिंदी भाषा को विश्व पटल पर अपने स्थान को न केवल सुनिश्चित करना अपितु उसके स्थान को दृढता पूर्वक सम्मान दिलाना है|

प्रो. सरन घई जीवन यात्रा के इस पड़ाव में अपनी अथक सक्रियता और ऊर्जस्विता का रहस्य बताते हुये वे बताते है कि "अपने आपको निरंतर व्यस्त रखना, मनःस्थिति को पॉजिटिव रखना, सदैव कुछ करने की स्वयं को प्रेरणा देते रहना, विश्व में कुछ ऐसा कर जाने की भावना कि मृत्युपरांत मरूँ नहीं, याद रखा जाऊँ, बस, यही सब कुछ है जो मुझे 24 घंटे में 36 घंटे काम करने की ओर प्रेरित करता रहता है|"

संदर्भ ग्रंथ

मेरे साक्षात्कार: ई-मेल
हस्ताक्षर पत्रिका : डॉ. सुमन सिंह
सीमा असीम:- करुणावती पत्रिका
ट्रू मीडिया पत्रिका सरन घई विशेषांक दिल्ली|
लघुशोध कार्य- सरन घई कृत मुक्तिपथ-प्रेमपथ महाकाव्यगीत में मानवीय मूल्य महेश टेलर